अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2021) दिनांक : 18.12.2021

समय सीमा : 3 घंटा पंचम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

संजया–25

प्र. 1 कोई पांच द्वार लिखें– 10

(क) छेदोपस्थापनीय–स्थिति द्वार।

(ख) परिहार विशुद्धि चारित्र–परिणाम द्वार।

(ग) परिहार विशुद्धि चारित्र–सन्निकर्ष द्वार।

(घ) छेदोपस्थापनीय चारित्र–काल द्वार।

(ङ) सामायिक चारित्र–गति स्थिति पदवी द्वार।

(च) यथाख्यात चारित्र–आकर्ष द्वार।

(छ) सूक्ष्म संपराय चारित्र–प्रवज्या द्वार।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 6

(क) कौन से चारित्र वाले जब शुभ योग प्रधान होते हैं, तो वे नोसंज्ञोपयुक्त होते हैं?

(ख) उपशम श्रेणी एक जन्म में कितनी बार ली जा सकती है?

(ग) सन्निकर्ष किसे कहते हैं?

(घ) बारहवें गुणस्थान की अंतिम आवलिका में किस कर्म की उदीरणा होती है?

(ङ) महाविदेह में एक साथ कितनी दीक्षा का उल्लेख मिलता है?

(च) उपसंवद्हान का क्या तात्पर्य है?

(छ) चारों कषाय किस गुणस्थान तक जाते हैं?

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) सामायिक चारित्र का स्थिति द्वार लिखते हुए बताएं कि जघन्य व शाश्वत स्थिति किस अपेक्षा से घटित होती है?

(ख) छेदोपस्थापनीय चारित्र का अंतर द्वार लिखते हुए बताएं कि अनेक जीवों की अपेक्षा से जघन्य व उत्कृष्ट अंतर किस अपेक्षा से घटित होता है?

(ग) परिहार विशुद्धि चारित्र का आकर्ष द्वार लिखते हुए बतायें कि एक भव तथा अनेक भव की अपेक्षा से कितनी बार व किस अपेक्षा से चारित्र का ग्रहण हो सकता है?

(घ) यथाख्यात चारित्र का परिणाम द्वार लिखते हुए बताएं कि जघन्य एवं उत्कृष्ट परिणाम किस अपेक्षा से है?

नियंठा–25

प्र. 4 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) पुलाक–प्रवज्या द्वार।

(ख) प्रतिसेवना–आकर्ष द्वार।

(ग) कषायकुशील–परिणाम स्थिति।

(घ) स्नातक–काल द्वार।

(ङ) बकुश–गतिस्थिति, पदवी।

(च) प्रतिसेवना–कर्म उदीरणा द्वार।

(छ) पुलाक–सन्निकर्ष द्वार।

(ज) पुलाक–अंतर द्वार।

प्र. 5 किन्हीं सात प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 7

(क) कषाय कुशील का वेद द्वार लिखें।

(ख) पुलाक शब्द का क्या अर्थ है?

(ग) प्रच्छन्न रूप से दोष कौन सा निर्ग्रंथ लगाता है?

(घ) कौन से निर्ग्रंथ तीर्थी अतीर्थी दोनों होते हैं?

(ङ) अप्रतिस्त्रावी का क्या तात्पर्य है?

(च) अतीर्थी का क्या अर्थ है?

(छ) पुलाक का उपसंपद्हान द्वार लिखें।

गीतिका (नियंठा दिग्दर्शन)–10

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) साधु, सूत्र व छह काय के प्रति कोई शंका रखता है तो उसे भगवान ने क्या कहा है? उसे किस आश्रव में देखा जा सकता है?

(ख) घोड़े के रूप बनाने वाला मुनि का उदाहरण किस सूत्र व किस शतक में पाया जाता है? उसे हम निश्चय दृष्टि से क्या नहीं कह सकते हैं?

(ग) जो मुनि डंडों से सेना को भगा देते हैं वे क्या चीज के प्रतिसेवी होते हैं उन निर्ग्रंथ का नाम व गुणस्थान बताऐं।

प्र. 7 कोई दो पद्यों को भावार्थ सहित लिखें– 8

(क) उगणीसै.....होय।।

(ख) इम छहो.....खोय।।

(ग) छठै.....नी होय।।

(घ) पडिसेवी मूल.....नहि होय।।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–40

प्र. 8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) पच्चीस बोल–अंतरंग तप के भेद ***अथवा*** स्पर्शनेन्द्रिय के विषय। 2

(ख) चतुर्भंगी–पन्द्रहवां बोल ***अथवा*** आश्रव के भेद। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–जीव के सात भेद से लेकर तेरह भेद तक ***अथवा*** छह से लेकर ग्यारह गुणस्थान तक। 3

(घ) तत्त्वचर्चा–संज्ञी-असंज्ञी, सूक्ष्य-बादर, त्रस-स्थावर की चर्चा ***अथवा*** अरिहंत भगवान की पृच्छा। 3

(ङ) कर्म प्रकृति–अनुभाग बंध की व्याख्या करें। ***अथवा*** अशुभ नाम कर्म के प्रथम दस आनुभाव लिखें।4

(च) जैन तत्त्व प्रवेश–(प्रथम खंड) रूपी-अरूपी द्वार ***अथवा*** औदायिक भाव। 4

(छ) प्रतिक्रमण–अभ्युत्थान सूत्र ***अथवा*** आलोचना सूत्र। 3

(ज) जैन तत्त्व प्रवेश–(द्वितीय व तृतीय खंड) श्रावक चिंतन द्वार ***अथवा*** नय के दो प्रकार से प्रारंभ करते हुए प्रमेय तक लिखें। 4

(झ) इक्कीस द्वार–अचरम ***अथवा*** अभाषक पूरा बोल लिखें। 4

(ञ) बावन बोल–संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा? ***अथवा*** द्रव्य पुण्य, भाव पुण्य कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन? 3

(ट) लघु दण्डक–समुद्घात असमुद्घात मरण द्वार तक ***अथवा*** ज्ञान द्वार–सात नारकी से प्रारंभ कर अंत तक लिखें। 4

(ठ) पांच ज्ञान–श्रुत के समुच्चय रूप से चार प्रकार में से भावतः का वर्ण करें ***अथवा*** कालिकी उपदेश लिखें। 3